11/05/2020

अब्दुल बारी मेमोरियल कॉलेज, जमशेदपुर
इंटरमीडिएट, द्वितीय वर्ष (वाणिज्य एवं कला)
विषय - हिन्दी कोर (गद्य भाग)
पाठ का नाम - श्रम-विभाजन और जाति प्रथा
लेखक - बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर

(वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर)

प्रश्न:1 श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा रचना के रचनाकार कौन है?
उत्तर - बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर।

प्रश्न:2 बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर का जन्म कब हुआ था?
उत्तर - 14 अप्रैल 1891 ई० को।

प्रश्न:3 बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर का जन्म कहाँ हुआ था?
उत्तर - मध्य प्रदेश के महू नामक स्थान पर।

प्रश्न:4 भारतीय संविधान के निर्माता कौन है?
उत्तर - बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर।

प्रश्न:5 बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर का निधन कब हुआ?
उत्तर - सन् 1956 ई० को।

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए —

1.7 यह विडंबना की ही बात है कि इस युग में भी 'जातिवाद' के पोषकों की कमी नहीं है। इसके पोषक कई आधारों पर इसका समर्थन करते हैं। समर्थन का एक आधार यह कहा जाता है कि आधुनिक सभ्य समाज 'कार्य कुशलता' के लिए श्रम-विभाजन को आवश्यक मानता है, और चूँकि जाति-प्रथा भी श्रम-विभाजन का ही दूसरा रूप है इसलिए इसमें कोई बुराई नहीं है। इस तर्क के संबंध में पहली बात तो यही आपत्तिजनक है कि जाति-प्रथा श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिक-विभाजन का भी रूप लिए हुए है।

प्रश्न(क) लेखक किस विडंबना की बात कह रहा है?

उत्तर- लेखक कह रहा है कि आधुनिक युग में कुछ लोग जातिवाद के पोषक हैं। वे इसे बुराई नहीं मानते। इस प्रवृत्ति को यह विडंबना कहता है।

प्रश्न(ख) जातिवाद के पोषक अपने समर्थन में क्या तर्क देते हैं?

उत्तर- जातिवाद के पोषक अपने मत के समर्थन में कहते हैं कि आधुनिक सभ्य समाज में

कार्य-कुशलता के लिए श्रम-विभाजन को आवश्यक माना गया है। जाति-प्रथा भी श्रम-विभाजन का दूसरा रूप है। अतः इसमें कोई बुराई नहीं है।

प्रश्न(ग) लेखक क्या आपत्ति दर्ज कर रहा है?

उत्तर लेखक जातिवाद के पोषकों के तर्क को सही नहीं मानता। वह कहता है कि जाति-प्रथा केवल श्रम-विभाजन ही नहीं करती। यह श्रमिक-विभाजन का भी रूप लिए हुए है। श्रम-विभाजन और श्रमिक-विभाजन दोनों में अंतर है।

2.1 जाति-प्रथा पेशे का दोषपूर्ण पूर्वनिर्धारण ही नहीं करती बल्कि मनुष्य को जीवन-भर के लिए एक पेशे में बाँध भी देती है। भले ही पेशा अनुपयुक्त या अपर्याप्त होने के कारण वह भूखों मर गया। आधुनिक युग में यह स्थिति प्रायः आती है, क्योंकि उद्योग-धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में निरंतर विकास और कभी-कभी अकस्मात परिवर्तन हो जाता है, जिसके कारण मनुष्य को अपना पेशा बदलने की आवश्यकता आवश्यकता पड़ जाती है और यदि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मनुष्य को अपना पेशा बदलने की स्वतंत्रता न हो तो इसके लिए भूखों मरने के अलावा क्या चारा

रह जाता है? हिंदू धर्म की जाति प्रथा किसी भी व्यक्ति को ऐसा चुनने की अनुमति नहीं देती है, जो उसका पैतृक पेशा न हो, भले ही वह उसमें पारंगत हो। इस प्रकार पेशा परिवर्तन की अनुमति न देकर जाति-प्रथा भारत में बेरोजगारी का एक प्रमुख व प्रत्यक्ष कारण बनी हुई है।

प्रश्न(क) जाति-प्रथा किसका पूर्वनिर्धारण करती है? उसका क्या दुष्परिणाम होता है?

उत्तर- जाति-प्रथा पेशे का दोषपूर्ण पूर्वनिर्धारण करती है। वह मनुष्य को जीवन-भर के लिए एक पेशे से बाँध देती है। पेशा अनुपयुक्त या अपर्याप्त होने के कारण व्यक्ति को भूखा मरना पड़ सकता है।

प्रश्न(ख) आधुनिक युग में पेशा बदलने की जरूरत क्यों पड़ती है?

उत्तर- आधुनिक युग में उद्योग-धंधों का स्वरूप बदलता रहता है। तकनीक के विकास से किसी भी व्यवसाय का रूप बदल जाता है। इस कारण व्यक्ति को अपना पेशा बदलना पड़ सकता है।

प्रश्न(ग) पेशा बदलने की स्वतंत्रता न होने से क्या परिणाम होता है?

उत्तर- तकनीक व विकास कि प्रक्रिया के कारण उद्योगों का स्वरूप बदल जाता है। इस कारण व्यक्ति को अपना व्यवसाय बदलना पड़ता है। यदि उसे अपना पेशा बदलने की स्वतंत्रता न हो तो उसे भूखा ही मरना पड़ेगा।